[illegible]

'उपन्यास का स्वरूप' का शोध
डॉ० सतीश चन्द्र पाठक

[illegible] हैं। जैसे ही यह प्रक्रिया आरंभ
[illegible] का जन्म होता है यह संवाद ही है जो
[illegible] में सहजता और विश्वसनीयता का भाव पैदा करता
है। [illegible] है न कि जब तक आदमी मौन है तब तक उसकी
[illegible] की पहचान नहीं हो सकती। किन्तु उसके बोलते
ही [illegible] उसकी आन्तरिक विशेषताएँ सामने आ जाती हैं
[illegible] उसकी चारित्रिक विशेषताओं का भी दर्पण होता है।
[illegible] स्थान, समय, और भिन्न परिस्थितियों में [illegible]
[illegible] उसके स्वभाव, उसकी चारित्रिक विशेषताओं को
[illegible] है [illegible] यही उपन्यास का मूल
[illegible] पात्र के चरित्र पर प्रकाश डालने का यदि कोई
[illegible] है तो वह है उसका संवाद। संवाद ही
[illegible] है कथानक का विकास। संवाद कथा
[illegible] का काम करता है। तात्पर्य उपन्यास
[illegible] होता है संवाद का महत्वपूर्ण योग
[illegible] इस दृष्टि से संवाद या कथोपकथन उपन्यास
का महत्वपूर्ण तत्व है जिसके अभाव में उपन्यास [illegible]
[illegible] रह जाएगा उसे एकालाप के रूप में
[illegible] उपन्यास के रूप में नहीं, इस प्रकार
[illegible] है कि कथोपकथन उपन्यास के पात्रों में
[illegible] जाता है, पात्रों के चरित्र पर प्रकाश डालता है
[illegible] कथानक को गति प्रदान करता है एवं उसे
[illegible] करता है। अतः कथानक उपन्यास का
महत्वपूर्ण तत्व इसमें संशय नहीं है।

(IV) देशकाल या वातावरण :- पात्रों के चित्रण को पूर्णता प्रदान करने तथा स्वाभाविकता की रक्षा के लिए उपन्यास में देश-काल का चित्रण एक अनिवार्य तत्व है। इसके बिना उपन्यास ~~सफल~~ स्वाभाविकता के ~~धरा~~ फलक पर नहीं उभर सकता। पात्रों के व्यक्तित्व का अनुमान उनके संवाद या उनकी बात-चीत से हो जाता है किन्तु पात्र जिन स्थितियों में रहते हैं, जिस वातावरण में कार्य करते हैं, उसके वर्णन के बिना पात्रों के चरित्र में पूर्णता नहीं आ सकती। ऐसे में वे पात्र अयथार्थ या शून्य में लटके हुए से लग सकते हैं। अतः यह अनिवार्य है कि कथानक की घटनाओं के घटित होनेवाले स्थानों, उसकी पूर्ण परिस्थितियों तथा घटना के घटित होनेवाले समय का वर्णन इस प्रकार होना चाहिए कि वह पाठक के कल्पनापर सजीव हो जाए जिसके आलोक में पात्रों की सजीवता पर वह विश्वास करने को बाध्य हो जाए।

प्राचीन कथाओं के पात्र देशकाल निरपेक्ष होते थे जिसके कारण उनमें एक अतीन्द्रिय भाव पैदा हो जाता था तथा जिससे पाठक या श्रोता उनसे तादात्म्य स्थापित नहीं कर पाता था। जबकि उपन्यास में देश-काल का ऐसा यथातथ्य वर्णन किया जाता है कि घटनाएँ एवं पात्र संपूर्णतः वास्तविक एवं यथार्थ प्रतीत होने लगते हैं। कुछ उपन्यासों में तो देश-काल को इतना सजीव बना दिया जाता है कि वह स्वयं उपन्यास का एक पात्र हो जाता है। कभी-कभी तो देशकाल में स्थानीयरंग तथा प्रादेशिक विवरण इतना अधिक और चमत्कारोत्पादक हो जाता है कि उनके आधार पर उपन्यास का एक अलग वर्गीकरण ही हो जाता है जिसे हम आंचलिक उपन्यास कहते हैं।